सत्य साहित्य

वर्ष 5 / अंक 4
जुलाई 2022
Year 5/ No. 4
July
2022

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजि छोड़िये कोटि बैरी सम,
यद्यपि परम सनेही ॥१॥
तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषन बन्धु
भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो, कन्त ब्रज बनितनि
भये मुद मंगलकारी ॥२॥
नाते नेह राम के मनियत सुहृद
सुसेव्य जहां लौं।
अंजन कहा आंखि जेहि फूटै
बहुतक कहौं कहां लौं ॥३॥
तुलसी सो सब भांति परम हित
पूज्य प्रानतें प्यारे।
जासों होय सनेह रामपद
एतो मतो हमारो ॥४॥

(परम पूजनीय स्वामी जी
महाराज की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- बधाई
- Behaviour of the Devotee
- यात्री – भाग–3
- शिष्य कैसा हो ?
- आप बीती
- श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण : देवास
- विभिन्न केन्द्रों से
- कैलेन्डर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

व्यास पूर्णिमा की हार्दिक बधाई

Wish you a happy Vyas Poornima.
May Prabhu Ram be ever with you
& you have His Grace in abundance.
Keep His remembrance constant.
Jai Jai Ram.
Jai Jai.

आप सभी को व्यास पूर्णिमा की बधाई। प्रभु राम हमेशा आपके साथ रहें और आप पर उनकी भरपूर कृपा बनी रहे। परमात्मा का स्मरण सतत् रखें। जय जय राम।

पूजनीय महाराज जी,
धरती में तुम, आकाश में तुम,
सूरज में तुम, चंदा में तुम,
पहाड़ों में तुम, पेड़ों में तुम,
पत्तों में तुम, फूलों में तुम,
हवा में तुम, फ़िज़ा में तुम,
दिलों में तुम, मनों में तुम,
बस तुम ही तुम, बस तुम ही तुम!
नमो नमः गुरुदेव तुमको नमो नमः
आपके प्यारे बच्चे

Dear Maharaj ji,
Thank you for always being there for us, for being our guiding spirit, for showing us the right path, and for the unconditional love and blessings.
Happy Gurupurnima!
Your dear children

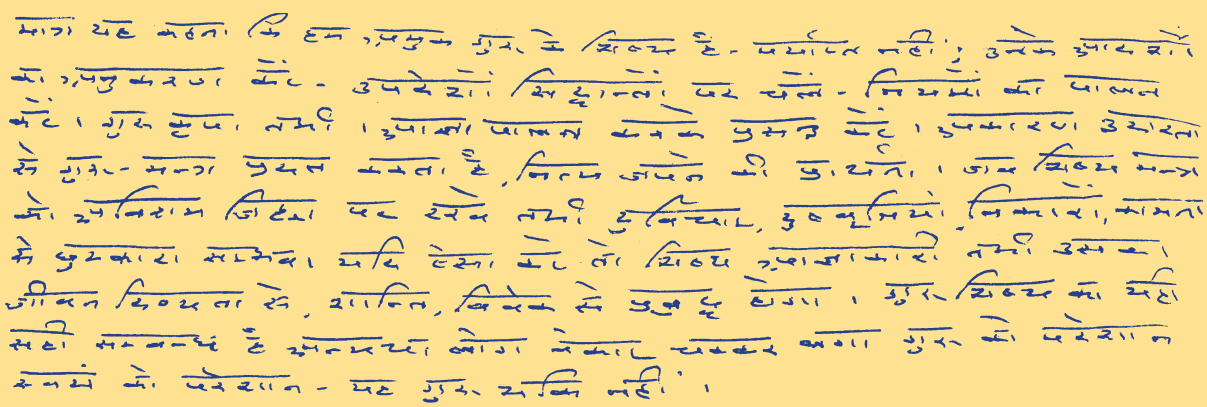

To simply say that I am so and so Guru's disciple is not enough. Follow his ideals, abide by his principles and act in accordance with his teaching, Guru Kripa descends then. Please your Guru by obeying him, then he bestows you with unconditional Grace. Constant remembrance in prayer- it is then possible to get rid of all vices, negativity and desires, only if the disciple does jaap of the Guru-Mantra incessantly. If this is how the disciple lives his life, then he/she is an obedient disciple. Only then will his life be filled with bliss, peace and wisdom. This is the true relationship of Guru and Shishya. Otherwise, people unnecessarily bother the Guru and themselves. This is not Guru-Bhakti.

Behaviour of the Devotee

सत्यानन्द

Behaviour (demeanour), to the discerning people, is the way one interacts with friends and relatives, treats one another in the family and community, at work or otherwise. In behaviour, the devotee's life should be simple, artless, truthful, guileless and free from deceit and deception. Such a pure life would bear a testimony to the influence of prayer and devotion on the devotee.

If the behaviour of a person of devotion ('Upaasak') also happens to be like those worldly people who often resort to trickery, deceit, misdeeds and misconduct in their dealings, then it is clear that prayer has had no effect on his life, social interaction or business transactions. Ideally, a person's speech and actions should express and reflect his heart. It is only when the humane sentiments of devotion are expressed in virtuous actions that it becomes evident that the devotee has known and practised devotion in its true sense. If this does not happen, the devotion happens to be sheer rote learning and downright pretension. Indeed, society learns of the person's inner purpose by his behaviour. For this reason, a devotee's inner feelings should shine through his behaviour in much the same way as the stars shine brightly in the sky at night.

In his behaviour, the devotee should be gentle, mature, polite, and should also exhibit genial and good disposition. His dealings in business, trade and occupation should be upright and straightforward. The devotee, instead of being miserly, should always be liberal in showing respect and magnanimity to others.

(Translation of "Upasak Ka Antrik Jeewan" page 17)

"विक्रम खोल की यात्रा"

(यात्री–भाग III: सत्य साहित्य, अप्रेल 2022 का शेष भाग।)

प्रेम

अब हो भी क्या सकता था। राम राम राम राम! पौ फटते ही उस गाँव की ओर चल पड़ा। इतनी ठण्डी में कोई जीव रास्ते में दिखाई नहीं पड़ा। आबादी आ गई। कच्चे–कच्चे घर थे, धान कूटने की आवाज आ रही थी। एक घर पक्की ईंटों का था, सीधा वहीं चला गया और द्वार पर टिक टिक की। सेठ जी बाहर पधारे। यात्री ने नमस्कार किया और कहा कि मैंने एम. एल. ए. के गाँव जाना है। वे सेठ जी बोले 'आप अन्दर आओ, पधारो, मैं अभी अपना आदमी साथ भेजता हूँ।' फिर सेठ जी अन्दर चले गये और पानी ले आये। हाथ मुँह धुलाया, पाँव धुलाये, तौलिया दिया, फिर चाय पिला कर अपना आदमी साथ भेज दिया। वह उड़िया व्यक्ति हिन्दुस्तानी नहीं जानता था। आगे–आगे–तेज–तेज हो लिया। कई नदी नाले और टीले लाँघते–बाट काटते जा रहे थे, चुपचाप–भागते, हाँफते, राम राम करते एक ग्राम के निकट पहुँचे। उस उड़िया ने दूर से ही उंगली से संकेत किया–उस एम. एल. ए. के मकान की ओर और वहीं से स्वयं वापस लौट पड़ा। यात्री ने हाथ जोड़े कि बहुत धन्यवादी हूँ–इस बात का संकेत करने के लिये वह उड़िया हँस पड़ा और उसने भी हाथ जोड़ दिये और अपनी राह ली।

यात्री उस घर की ओर बढ़ा और दरवाजा खटखटाया। एक सौम्य सियाना युवक बाहर आया और हँसकर बड़े प्यार से स्वागत किया। वह अंग्रेजी बोलता था, उसे यात्री ने कहा कि विक्रम खोल देखने के कारण कष्ट देने आया हूँ। वह युवक अतिथि को कुर्सी देकर स्वयं अन्दर चला गया। थोड़ी देर में काँसी के बहुत बड़े कटोरे में प्रातराश ले आया। दूध में फुलियाँ (जैसे हरिद्वार का प्रसाद होता है) डाली हुई थीं, वह खाकर पेट भर गया।

फिर हम विक्रम खोल देखने चल पड़े साथ उनके 4–5 सेवक थे जिनके पास कुल्हाड़े थे। घने जंगल में चट्टान है, जिस पर Prehistoric इतिहास से पूर्व की कोई भाषा लिखी हुई है वहाँ बैठ कर परम प्रभु श्री राम का धन्यवाद किया और वापस गाँव लौटे। स्नान किया और भोजन खाया, भोजन बहुत ही स्वादु था। फिर वह युवक रेलगाड़ी पर चढ़ा कर वापस लौट गया। सायंकाल के समय 24 घन्टे के पश्चात् वहीं महानदी के तट पर कथा के समय जा पहुँचा। कथा समाप्त हुई–सब लोग यह जान कर बड़े प्रसन्न हुये कि यात्री विक्रम खोल देख कर सुख स्वास्थ्यपूर्वक वापस लौट आया है, जब लोग चले गये तो चौकीदार से यात्री ने झिझकते–झिझकते पूछा कि यहाँ किसी को कोई चीज तो नहीं मिली? उसने पूछा, ''आपका क्या गुम हुआ है?'' यात्री ने कहा, "कल रात्रि को दौड़ भाग में कहीं बटुवा गिर गया था। मैंने सोचा शायद किसी को मिला हो।"

चौकीदार ने कहा कि "रात को खाना खाने दुकान पर मैं जा रहा था–लालटैन मेरे हाथ में थी। मुझे रास्ते में पड़ा हुआ एक बटुवा मिला। वह मैंने उठा लिया और थाने में जमा करा दिया है।" फिर यात्री के साथ थाने में गया और वहाँ से बटुवा भी मिल गया।

(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज का लेख, जनवरी 1963 के सत्य साहित्य अंक में प्रकाशित) ■

शिष्य कैसा होना चाहिए?

(सत्य साहित्य जनवरी 2022 का शेष भाग।)

तुकाराम की चर्चा चल रही है। शिष्य कैसा होना चाहिए? कैसा नहीं होना चाहिए? तुकाराम को स्वप्न में गुरु मिले हैं। तुकाराम स्वयं फरमाते हैं (स्वप्न की बात) "मैं स्नान करके आ रहा था, रास्ते में मुझे गुरु महाराज मिले उन्होंने कहा, "आपको ज्ञान देने के लिए, उपदेश देने के लिए विठ्ठल भगवान की प्रेरणा से आया हूँ।" मानो गुरु महाराज जी जानते हैं कि इष्ट कौन हैं, तभी उनकी ओर से संदेश (message) आया है।

तुकाराम कहते हैं,"महात्मन! मैंने गुरुकृपा का पात्र बनने के लिए कोई सेवा नहीं की।" संत तुकाराम के शब्द बहुत मार्मिक हैं, अनपढ़ संत लेकिन बहुत मार्मिक बातें कही है उन्होंने। मानो गुरु कृपा का पात्र बनने के लिए उनकी निजी सेवा, उनके आदर्शों की सेवा, उनके आदेशों का पालन ये सब अनिवार्य बातें हैं। सभी में गुरु महाराज का रुप देख कर उन सबके साथ वैसा ही व्यवहार करना जैसा कि गुरु महाराज जी के साथ किया जाता है। शास्त्र कहता है इससे बढ़ कर गुरु पूजा और कुछ नहीं। कोई भी सच्चा गुरु अपनी टाँगे दबवाना, अपने पाँव दबवाना नहीं चाहता। जो चाहते हैं उनका अपना हिसाब किताब होगा। कोई किसी की आलोचना नहीं। शास्त्र ऐसा कहता है कि सच्चा गुरु यह नहीं चाहता। सबमें गुरु रुप देख कर और उनसे वैसा व्यवहार करना जैसा कि आप गुरु के साथ करते हैं ही सच्ची गुरु सेवा है। जैसा एक शिष्य गुरु के साथ व्यवहार करता है वैसा

व्यवहार शेष सबके साथ करना चाहिए। शास्त्र कहता है इससे बढ़ कर कोई और गुरु सेवा नहीं।

जो महिला और पुरुष साधक जो बैठाने की सेवा करते हैं उनसे मैं हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हूँ कि अपने अनुसार न बिठाएँ, आग्रह न करें कि आप यहीं बैठें। कोई वृद्ध है जो दीवार के साथ बैठना चाहते हैं क्योंकि उन्हें दीवार की आवश्यकता है, लेकिन आप उन्हें जहाँ जगह हैं वहीं बिठाना चाहते हैं, यह बात शोभा नहीं देती। जहाँ वह बैठना चाहते हैं, वहीं उन्हें बैठने दीजिए, adjust तो आप को करना चाहिए। कोई बात नहीं आप जहाँ बैठना

चाहते हैं बैठिए। हम औरों को इस तरफ उस तरफ करके पंक्ति बना देंगे। पंक्ति में बैठा हुआ अच्छा लगता है पर आग्रह भी बहुत अच्छा नहीं लगता। पूर्ण आशा है कि आप इस छोटी सी बात का ध्यान रखेंगे।

मैंने गुरु सेवा नहीं की तुकाराम कहते हैं, इसके बावजूद भी मेरे ऊपर गुरु कृपा है तो मैं समझता हूँ कि परमात्मा मेरे ऊपर बहुत मेहरबान हैं। गुरु महाराज ने राम कृष्ण हरि का मंत्र दिया है। तुकाराम कहते हैं, मेरा मंत्र 'राम कृष्ण हरि' और इष्टदेव विटठ्ल भगवान। यहाँ पर भी तुकाराम बहुत बड़ी बात स्पष्ट करते हैं। आपका मंत्र 'राम' जो स्वामी जी महाराज ने हमें दिया है और इष्ट भगवान श्री कृष्ण हो सकते हैं। आपकी इष्ट माँ शेरांवाली, जोतांवाली हो सकती है, चतुर्भुज भगवान भी हो सकते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं, मेरे 'राम' मंत्र को इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता। Mantra assures you I will adjust myself. आपका जो इष्ट, जो आपका प्यारा है आपको उसे बदलने की जरुरत नहीं है। यह भगवन्नाम की महिमा है, गुरु मंत्र की महिमा है। मत इन चक्करों में पड़िएगा। आपको बाँके बिहारी बहुत अच्छे लगते हैं बहुत सुन्दर बात है, मंत्र 'राम' जपिएगा। क्यों? यह अब साधारण शब्द नहीं है। यह गुरु महाराज के मुख से निकला हुआ 'गुरु मंत्र' है। यह अब साधारण शब्द नहीं रहा । तुकाराम के इष्ट विठ्ठल भगवान और मंत्र 'राम कृष्ण हरि' हैं।

राम कृष्ण हरि, इस मंत्र की उपासना वे करते हैं। गुरु दक्षिणा में गुरु महाराज ने एक पाव तूप (उस वक्त जो पाव होता था।) माँगा। शास्त्र परम्परा के अनुसार गुरु दक्षिणा देनी पड़ती है तो गुरु शिष्य का सम्बन्ध शास्त्र अनुसार पक्का हो जाता है। कोई भी गुरु मंत्र देगा तो शिष्य गुरु दक्षिणा देते हैं। बड़े–बड़ों ने दी है प्रभु राम जी ने भी दी होगी। भगवान श्री कृष्ण ने भी दी होगी इतिहास ऐसा कहता है। संदीपनी महाराज ने भगवान श्री कृष्ण से जो कुछ मांगा, जैसे भी हो सका, उन्होंने उसे सम्पूर्ण किया, परम्परा है।

स्वामी जी महाराज निराले हैं। वे कहते हैं कि मुझे किसी प्रकार की गुरु दक्षिणा नहीं चाहिए मेरे से इतना वायदा कर दो कि आप 'राम राम' जपते रहोगे, ध्यान में बैठते रहोगे, अमृतवाणी का पाठ करते रहोगे। यह स्वामी जी महाराज की गुरु दक्षिणा है। उस वक्त हमसे जो वायदा लिया जाता है, यह सब स्वामी जी महाराज की गुरु दक्षिणा है। गुरु महाराज ने तुकाराम से एक पाव तूप माँगा। तूप का एक अर्थ है–'मैं और मेरा' 'अहंता और ममता'। सारी आसक्तियों का कारण सब चीज़ का कारण, आधि–व्याधि का कारण ये दो शब्द हैं। महर्षि व्यास के ये शब्द याद हैं न आपको? 'मैं और मेरा बन्धन का कारण' 'तू और तेरा' मोक्ष का साधन। कैसी मार्मिक बात है युगों युगान्तरों तक इन शब्दों, इन वाक्यों को कोई challenge नहीं कर सकता। 'मैं और मेरा' सकल बन्धनों का कारण। 'मैं और मेरा' बन्धन का कारण और ये शब्द यदि 'तू और तेरा' में परिवर्तित हो जाएँ तो यह मोक्ष का साधन (मुक्तिदाता शब्द)।

गुरु महाराज ने तुकाराम से कहा, अपने सारे के सारे देह भाव मुझे दे दो। एक पाव तूप यानि, जितने भी सबके सब देह भाव हैं। जैसे स्वामी जी महाराज ने आत्मिक भावनाओं में कहा है। ऐसे ही देह भाव, मैं पुरुष हूँ इत्यादि मैं गोरा काला, मैं ब्राह्मण, यह क्षत्रिय, ये सब देह भावनाएँ हैं। मैं अमीर, यह गरीब, गोरा काला, मैं उत्कृष्ट, वह निकृष्ट यह सब देह भावना है। ये सब शरीर के सम्बन्ध हैं यह मेरा चाचा, मेरा मामा, ये सब देह भाव हैं। आत्मा न

महिला है, न पुरुष यह आत्मा के सम्बंध नहीं हैं। ये सब शरीर के सम्बन्ध हैं, मैं रोगी, मैं निरोगी, मुझे यह रोग है, यह मेरा पेट, मेरा सिर है। जहाँ ये सब बातें आती हैं उन सब को देह भाव कहा जाता है। अपनों के साथ, परायों के साथ, सारी की सारी आसक्तियाँ मुझे दे दो। गुरु महाराज ने तुकाराम से उसके सारे के सारे देह भाव मांग लिए हैं। 'गुरु दक्षिणा' कोई इन्कार नहीं कर सकता। हरेक को गुरु दक्षिणा देनी पड़ती है, देते हैं शिष्य। एक पाव तूप माँगा। तूप कहा जाता है घी को यानि चिकनाहट, चिपचिपाहट greases जहाँ लगता है वहाँ निशान डाल देता है। जमीन पर लगता है तो फिसलन कर देता है आप सावधान नहीं तो गिर कर रहोगे, पाँव पड़ा और आप गिरे। चिपकने वाली चीज़ को बन्धन कहा जाता है। आसक्ति कहा जाता है। तुकाराम! तुम अपनी सारी की सारी आसिक्तयाँ मुझे दे दो। जहाँ भी जुड़े हुए हो अपनों के साथ, परायों के साथ वह सब मुझे दे दो। वाह गुरु महाराज ! ऐसे गुरु भी सम्माननीय हैं और ऐसे शिष्य जो सब कुछ करने को तैयार, वन्दनीय हैं। तुकाराम ने यह सब करके दिखाया है।

आपका मंत्र 'राम' जो स्वामी जी महाराज ने हमें दिया है और इष्ट भगवान श्री कृष्ण हो सकते हैं। आपकी इष्ट माँ शेरांवाली, जोतांवाली हो सकती है, चतुर्भुज भगवान भी हो सकते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं, मेरे 'राम' मंत्र को इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता। Mantra assure you I will adjust myself. आपका जो इष्ट, जो आपका प्यारा है आपको उसे बदलने की जरुरत नहीं है। यह भगवन्नाम की महिमा है, गुरु मंत्र की महिमा है। मत इन चक्करों में पड़िएगा। आपको बाँके बिहारी बहुत अच्छे लगते हैं बहुत सुन्दर बात है, मंत्र 'राम' जपिएगा। क्यों? यह अब साधारण शब्द नहीं है। यह गुरु महाराज के मुख से निकला हुआ 'गुरु मंत्र' है। यह अब साधारण शब्द नहीं रहा।

परमात्मा की कृपा पत्नी भी बडी सुन्दर, पर बहुत कर्कश, बड़े जहरीले स्वभाव की। परमात्मा ने उसके प्रति आसक्त ही नहीं होने दिया। जब परमात्मा भक्तों पर दयालु, कृपालु होता है तो वह इसी प्रकार से सम्बन्ध जोड़ता जाता है।

शिष्य वह होता है जो गुरु की आज्ञा में रहे उसे शिष्य कहा जाता है। शिष्य सेवक भी होना चाहिए। सेवक के जीवन में अपने सुख का कोई स्थान नहीं है।

यह उस शिष्य की बातें की जा रही हैं जो शिष्यत्व का गुरु से पूर्ण लाभ लेना चाहता है। जो साधारण बन कर रहना चाहता है जैसे सारा संसार है, उसके लिए यह बातें नहीं हैं। जो सच्चा सेवक बन कर रहना चाहता है उसके लिए ये बातें हैं। इस सेवक के जीवन में अपने सुख का कोई स्थान नहीं। स्वामी को किस बात से सुख मिलता है, वह ऐसे शिष्य की करनी हुआ करती है। अपने सुख का उसके जीवन में कोई स्थान नहीं है।

वल्लभाचार्य जी ने अपने एक शिष्य को कहा कि वह भगवान रंगनाथ जी को पंखा करे, उस वक्त हाथ से खींचने वाले पंखें हुआ करते, डोरी बंधी हुई होती थी। ऊपर जाता तो हवा आती। रंगनाथ जी के मन्दिर में सिर पर ऐसा ही पंखा लगा हुआ था। शिष्य को कहा आँख बंद करके भगवान श्री को पंखा

करते रहो। जो आज्ञा प्रभु! भगवान श्री को इस शिष्य सेवक की गुरु के प्रति आस्था बहुत भाई। कैसी interconnected बातें हैं। गुरु की आज्ञा का अक्षरशः पालन करने वाला शिष्य परमात्मा को कितना भाता है कि थोड़ी देर में परमात्मा प्रकट हो गए। वत्स! आँखें खोल मेरे दर्शन कर। माफ करना मेरे राम ! मैं ऐसा नहीं कर सकता। मेरे गुरु की आज्ञा नहीं है। मेरे गुरु की आज्ञा है कि मैं आँख बंद करके आपको पंखा करुँ। और मैं वह कर रहा हूँ। मेरे गुरु महाराज की आज्ञा नहीं है कि मैं आँख खोलूं और आप के दर्शन करुँ। भगवान कहते हैं,''सोच ले मेरे दर्शन से वंचित रह जाएगा। मेरे दर्शनों का सुख अतुलनीय सुख है।'' शिष्य कहता है,''महाराजधिराज कितना भी अतुलनीय क्यों न हो, गुरु आज्ञा का पालन करने से जो मेरे गुरु को सुख मिलेगा उसके बराबर का तो नहीं हो सकता। मेरा कर्तव्य गुरु के सुख को देखना है न कि दूसरे के सुख को। मेरे अपने सुख का तो कोई स्थान ही नहीं है मेरे जीवन में।''

आप गुरु महाराज को प्रभु कहते हो, भगवान कहते हो इत्यादि इत्यादि आपको पता ही नहीं उसको यह शब्द सुन कर कितनी पीड़ा होती है, लेकिन आपको अपना सुख मिलता है इसलिए ऐसे शब्द उच्चारण करते हो।

देखो गुरु को क्या अच्छा लगता है, तदनुसार यदि शिष्य का आचरण हो तो वह गुरु कृपा का पात्र बनता जाता है, अन्यथा नहीं। साथ रहने वाले नहीं, पास रहने वाले नहीं शरीर के साथ जुड़ने वाले नहीं। आत्मा के साथ ऐसे लोगों का कोई सरोकार नहीं होता। गुरु अच्छी तरह से जानता है भीतर से बहुत अच्छी तरह जानता है कि ऐसे शब्दों से सम्बोधित करने से आप एक विशेष बन जाते हो। आप अलग से बन जाते हो। मानो इस से ego बढ़ता है। विनम्रता जो शिष्य के अन्दर आनी चाहिए वह नहीं आ पाती।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी के प्रवचन से 3-2-2010) ■

आप बीती

गुरु जीवन-दाता

गुरु महाराज अपने शिष्यों की सदा रक्षा करते हैं। कुछ महीने पहले मेरे शरीर के हिस्से में छोटी सी गाँठ (tumour) बन गई थी और धीरे–धीरे ये गाँठ बढ़ती चली गई। मैंने डाक्टर को दिखाया तो वह कैंसर का रुप ले चुकी थी। पर राम जी की कृपा से यह कहीं और नहीं फैली थी। डॉक्टर भी हैरान थे। डॉक्टर ने surgery के लिए बताया। गुरु महाराज जी को अंग–संग मान कर मैं हस्पताल में दाखिल हो गई। गुरु महाराज जी ने मुझे हर पल अहसास करवाया कि वे मेरे साथ ही हैं। स्वामी जी महाराज का प्रिय न. 7 है। मेरा कमरा न. 7, Floor No. 7, मेरा OT No. 7, ICU ward No. 7 था। मैं हस्पताल से 13 मई को discharge हुई। Surgery से पहले मुझे बहुत डर लग रहा था। मेरी डॉक्टर मेरे पास आई और बोली आप डरो मत, अपने गुरु महाराज जी का

मुस्कुराता चेहरा अपने सामने लाओ और अपनी आँखें बंद कर लो तब मैं आपकी surgery करुँगी। उस समय मेरे अन्दर एक ऐसी शक्ति आई और मेरी surgery बिल्कुल ठीक हो गई। मैं राम राम का जाप और श्री अमृतवाणी का पाठ करती रही। जिस दिन मेरी छुट्टी हुई उसी रात स्वामी जी मेरे स्वप्न में आए। हाथ में सोटी लिए, हस्पताल के कमरे में कुर्सी पर बैठे मुस्कुरा रहे हैं। मुझे बोले,'' बेटा! खेल था, खत्म हो गया।'' मेरा विश्वास और भी प्रबल हो गया। मेरी कुछ रिपोर्टस अभी आनी थी, हम सब बहुत डरे हुए थे। मुझे फिर स्वामी जी डाक्टर के कमरे के बाहर मुस्कुराते हुए दिखे। मेरी रिपोर्टस बहुत अच्छी आईं। मेरी Chemo भी नहीं हुई। यह मेरे राम जी और गुरु जनों की अपार कृपा है, जो मुझे इतने बड़े कष्ट से निकाल कर जीवन दान दिया। विश्वास हो तो परमात्मा सब कुछ कर सकता है। कोटी–कोटी प्रणाम। ■

गुरुदेव-दर्शन

महाराज जी अपनी प्रशंसा पसन्द नहीं करते थे। वे अपने चरणानुगत साधकों के साथ मित्रता पूर्ण व्यवहार रखते थे, गुरु का सा गौरव या स्वामी का सा अधिकार उनके किसी भी व्यवहार में कभी दिखाई नहीं दिया। वे सम्मान नहीं, सौहार्द चाहते थे, पूजा नहीं, प्रेम चाहते थे, वे भावना का प्रकाशन भी यथार्थ की सीमा में चाहते थे, अतिशयोक्ति–पूर्ण बातें बिल्कुल नहीं भाती थीं। इसीलिए चिरकाल तक उनके श्री चरणों के सत्संग का मेरे मन वचन पर यह प्रभाव पड़ा है, कि मुझे भी ऐसी खुशामद–भरी बातें अच्छी नहीं लगतीं और न ही मेरे मुख से ऐसी कोई बात निकलती है।

किन्तु महाराज जी के जीवन काल में ही मुझे कुछ ऐसे अनुभव होने लगे कि वाल्मीकीय रामायणसार के रघुनन्दन श्री रामचन्द्र जी अपने सभी गुण–रुपों के साथ महाराज जी के दिव्य भव्य स्वरुप में झलक रहे हैं। मैं जब भी रामायण–सार पढ़ता या सुनता हूँ, उसमें श्री रामचन्द्र जी के गुणों का वर्णन मुझे महाराज जी के गुणों का वर्णन सा प्रतीत होता है। तब मुझे महाराज जी में श्री राम चन्द्र जी दीखते थे, अब मुझे श्री राम चन्द्र जी में महाराज जी का दर्शन होता है, इसी को मैं यहाँ, गुरुदेव दर्शन नाम दे रहा हूँ।

वे चित्र में चित्रकार का, सृष्टि में सर्जनहार का दर्शन कराने वाली दृष्टि से संसार को देखते थे। हम भी उनके साहित्य में साहित्यकार गुरुदेव का दर्शन करते हैं और ज्यों–ज्यों यह दर्शन स्पष्ट होता जा रहा है त्यों–त्यों ऐसा लगता है कि कृपा अवतरण हो रहा है। पूज्यपाद महाराज जी में जैसे श्री रामचन्द्र जी के गुण–रुप झलकते हैं ऐसे ही महाराज जी के गुण–रुप कुछ–कुछ झलकने लगे हैं। उन्हीं की कृपा से उस गुण सागर की गुण तरंगें हमारे –सभी साधकों के मन में उल्लासित हों, बस यही कामना है। यह कृपा मार्ग है, इसमें साधन की क्या चर्चा करें।

(सत्य साहित्य, नवम्बर 1961, पृष्ठ 21–23 में प्रकाशित) ■

Guru's Grace

2013 onwards due to a series of setbacks, I was quite financially stressed out. During the lockdown when I had time on my hands it struck me that I should look into past financial and tax records to see if everything was in order. If not Guru's grace, what else is this?

Going through past records it came to light that in FY 08-09 an income tax refund of about Rs. 2 lakhs was due. I filed an online grievance and met the Income Tax Officer who confirmed that the amount was due but could not be processed because of non-compliance by the company which had deducted tax at source (TDS) and advised me to get it rectified at that end. Inquiry revealed that the company had been sold to a UK based company and had changed its name.

Further, all the old staff had left and they could give me no leads regarding the new name. Their advice was to forget the money as there was no hope of recovery and the matter was more than 12 years old. I searched the internet for the whereabouts of this company. I zeroed in on a company in Bangalore which I thought could be the one. Again, there were no phone numbers available, just one Bangalore address. I requested the Income Tax Officer to send Verification of TDS to this company. To my surprise, she did so promptly. If not Guru's grace, what else is this?

After a month I called up the Officer and wonder of wonders she informed me that the party had verified the TDS. Just imagine, a company which had been bought and sold under dispute, whose name and address had changed, had actually retained old records and verified a 12 year old TDS matter which the new management had no involvement with. If not Guru's grace, what else is this?

However, she informed me that she did not have the power to process refund in excess of Rs.2 lakhs and further, since the matter was 12 years old she would have to send it to the Additional Commissioner for approval. She sent the case for approval and said there was nothing to do now but wait. For two months there was no news and then I remembered my friend in Income Tax who I was not in touch with for many years. I called him and to my astonishment he said he knew the Additional Commissioner's boss and would put in a word. And believe it or not, within next two days I got my full refund with interest. If not Guru's grace, what else is this?

Grace in the beginning, grace in the middle and grace in the end. Events like this and others leave no doubt in my mind that Gurujans are watching over us and are even more active now than they were in the mortal body. Never will I be able to repay the debt due to them.

Jai Gurudevas, Jai Jai Ram. All hail to them! ■

श्रीरामशरणम् देवास, मध्य प्रदेश-एक ऐतिहासिक विवरण

('श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण' के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)

श्रीरामशरणम् देवास जो कि मध्यप्रदेश का एक शहर है, इन्दौर महानगर से 35 कि.मी. उत्तर की ओर है और उज्जैन से भी 35 कि.मी. है। यहाँ तुलजा भवानी एवं माँ चामुण्डा माता की प्रसिद्ध टेकरी (पहाड़ी) है, जहाँ प्रति वर्ष लाखों की संख्या में प्रेमी भक्तों का तांता लगा रहता है। देवास औद्योगिक नगर है, यहाँ पर बैंक नोट मुद्रालय भी है। देवताओं की नगरी देवास। अनेक प्राचीन मन्दिर भी हैं।

देवास श्रीरामशरणम् सत्संग का आरम्भ लगभग 1980 से एक साधक परिवार से हुआ। बाद में साधकों के घरों पर सत्संग होते रहे। श्रीरामशरणम्, नई दिल्ली से मार्गदर्शन मिलता रहा है। यहाँ से साधकगण दिल्ली, हरिद्वार व अन्य स्थानों के साधना सत्संग में शामिल होते रहे हैं। सन् 1994 से पूज्य श्री महाराज का मार्गदर्शन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्राप्त होता रहा है।

पूज्य श्री महाराज जी के देवास आगमन पर दिनांक 17 फरवरी 1997 को, सोमवार के दिन भूमि पूजन हुआ था। बाद में निर्माण कार्य तेजी से चलता रहा। देवास व अन्य स्थानों के सहयोग एवं मार्गदर्शन से सत्संग भवन निर्मित हुआ, जिसमें पूज्य श्री महाराज का विशेष योगदान रहा।

इन्दौर साधना सत्संग की समाप्ति पर श्री महाराज जी देवास पधारे। दिनांक 12 फरवरी 2001 सोमवार के दिन पूज्य श्री विश्वामित्र सा के द्वारा श्री रामशरणम् का विधिवत् उद्घाटन हुआ। पूज्य श्री महाराज के आगमन पर उनका तिलक कर स्वागत हुआ। फिर महाराज ने नारियल चढ़ाकर अन्दर प्रवेश किया। दीपक प्रज्जवलित हुआ। पुष्पों से श्रंगार भी हुआ। श्री महाराज जी सिंहासन पर आसीन हुए, उन्हें तिलक किया गया। मानसिक रुप से आश्रम श्री महाराज जी को समर्पित किया गया। उस समय हम सब साधकों को अधिक अनुभव नहीं था। श्री महाराज जी ने मंगलमय धुन गाई श्री अधिष्ठान जी व गुरुजनों को मिठाई खिलाई गई। राम दरबार पहले से सुशोभित था। प्रातः के समय 9-30 बजे से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। श्री महाराज जी का प्रेरणादायी प्रवचन भी हुआ। देवास व अन्य स्थानों के साधकों की उपस्थिति में गरिमामय कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम की समाप्ति पर प्रसाद वितरण भी हुआ।

श्रीरामशरणम् देवास का पुनः नवीनीकरण हुआ जिसमें श्री स्वामी सत्यानन्द ट्रस्ट दिल्ली से एवं अन्य स्थानों के वरिष्ठ साधकों का मार्गदर्शन एवं सहयोग रहा। जिसका पुनः विशेष सत्संग समारोह दिनांक 12 फरवरी 2014, बुद्धवार को श्रीअमृतवाणी पाठ व प्रवचन एवं नाम दीक्षा का कार्यक्रम हर्षोउल्लास से हुआ।

तब से सत्संग दोनों समय नियमित होते रहे। करोना काल में प्रशासन के दिशा–निर्देशानुसार सत्संग होते रहे। ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

मार्च 2022 से जून 2022

- **होशियारपुर,** पंजाब में 6 मार्च को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 56 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जबलपुर**, मध्यप्रदेश में 12 एवं 13 मार्च को दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 192 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **इन्दौर**, मध्य प्रदेश में 21 से 24 मार्च तक तीन रात्रि साधना सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 112 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हिसार**, हरियाणा में 26 एवं 27 मार्च को दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 34 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सिरसा**, हरियाणा में 11 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 58 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फाज़लपुर**, कपूरथला पंजाब में 12 से 17 अप्रेल तक पाँच दिवसीय साधना सत्संग में 9 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **ज्वाली**, हिमाचल प्रदेश में 17 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 350 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भरेड़ी**, हिमाचल प्रदेश में 24 अप्रेल खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 40 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **गुना**, मध्यप्रदेश में 29 अप्रेल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 295 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रतनगढ़**, राजस्थान में 30 अप्रेल से 1 मई तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 300 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कण्डाघाट**, हिमाचल प्रदेश में 8 मई को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 25 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **ग्वालियर** में 14 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 9 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **चम्बी**, हिमाचल प्रदेश में 22 मई को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 54 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फरीदाबाद**, हरियाणा में 25 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 67 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मण्डी**, हिमाचल प्रदेश में 27 मई को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 20 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **तारागढ**, पंजाब में 1 जून को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का भव्य उद्घाटन हुआ जिसके बाद 200 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जालन्धर**, पंजाब 5 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 104 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मनाली**, हिमाचल प्रदेश में 14 जून से 16 जून तक 3 दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 25 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में मार्च, अप्रेल और मई में 125 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **ग्वालियर में रविवारीय (साप्ताहिक) सत्संग का शुभारम्भ**–परमात्मा श्री राम, परम पूजनीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज, परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज एवं परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज की अहैतुकी कृपा व आशीर्वाद से श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट (श्रीरामशरणम्) लाजपतनगर, दिल्ली की सम्बद्धता के साथ, गुरु त्रयी की भावमयी उपस्थिति में, श्रीरामशरणम् परिवार, ग्वालियर को निमित्त बनाकर, ग्वालियर में 8 मई से रविवारीय साप्ताहिक सत्संग प्रारम्भ हुआ है।

  शुभारम्भ के उपलक्ष्य में 7 मई 2022, शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड जी का पाठ तथा 12 घंटे का अखण्ड जाप भी हुआ। साप्ताहिक (रविवारीय) सत्संग, प्रातः 8-00 से 9-30 बजे तक होता है। स्थान : श्री अमृतवाणी सत्संग परिसर, सरस्वती हॉल, विनोद मार्केट के ऊपर, दीनानाथ ग्यासीलाल, दाल बाजार लश्कर, ग्वालियर। ■

Online Programmes held between 22nd February and May With the grace of Pujniya Gurujans, Satsangs broadcast through Shree Ram Sharnam's official Facebook and Youtube channel continue to be enthusiastically attended despite the end to Covid-19 restrictions.

Daily average attendance had been ever growing and Sunday Satsangs are also being attended and enjoyed by sadhaks around the world. The average number of daily attendees is more than 3000 sadhaks and the average for Sunday Satsangs is over 4680. Attendance at special events has been enthusiastic. Thus, Pujniya Maharaj Ji's avtaran diwas on 15th March had 6422 attendees and avtaran divas of Pujniya Swami Ji Maharaj on 16th April had a viewership of approximately 3965 people.

Online daily and Sunday Satsang broadcasts continue as does Sunderkand path on the 2nd of every month. Special programmes also continue to be broadcast online. ■

श्रीरामशरणम परिवार गुना द्वारा अमृतवाणी सत्संग एवं राम नाम की दीक्षा कार्यक्रम आयोजित

गुना में पहली बार वृहद अमृतवाणी सत्संग का श्रद्धालुओं को मिला लाभ

हरिभूमि न्यूज ⏭ गुना

श्रीरामशरणम परिवार, गुना द्वारा 29 अप्रैल शुक्रवार को शाम 6 से 7.15 बजे तक, श्री संकटमोचन हनुमान मंदिर विवेक कॉलोनी के परिसर में पहली बार आयोजित हुए वृहद अमृतवाणी सत्संग का लाभ बड़ी संख्या में उपस्थित श्रद्धालु जनों ने लिया। गुना नगर में पूर्ण अनुशासन व समयबद्धता के साथ तीव्र गर्मी के बावजूद, नगर व बाहर से भारी संख्या में आये हर वर्ग के श्रद्धालु जनों ने भावचाव के साथ, श्रीरामशरणम के संस्थापक परम पूजनीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज द्वारा रचित श्री अमृतवाणी जी के सुमधुर पाठ व अद्वितीय भजन कीर्तन का आनन्द लाभ लिया।

साथ ही परम पूजनीय संत श्री विश्वामित्र जी महाराज की जीवंत, ओजस्वी वाणी में वीडियो के माध्यम से "गुरुतत्व" पर हुए सारगर्भित आध्यात्मिक प्रवचन का भी लाभ लिया। इस प्रवचन में परम पूजनीय श्री महाराज जी ने गुरु 'शरीर' नहीं ₹ तत्व ₹ है, इस जटिल बिंदु को भी सरलतम उदाहरणों द्वारा समझाया। (छान्दोग्योपनिषद् में भी वर्णित है कि आत्मा को और सच्चे सुखों को भली प्रकार जानकर शरीर छोड़ने वाले मुक्तात्माओं का सारे लोकों में स्वतंत्र संचार हो जाता है वे सर्वत्र निर्बाध हो जाते हैं। स्पष्ट है कि देहत्याग के बाद गुरु भी सबके साथ और पास रहता है, रह सकता है। पूजनीय श्री महाराज जी ने वस्तु प्रधान व भाव

प्रधान साधना पद्धति का उल्लेख करते हुए श्रीरामशरणमकी भाव प्रधान साधना पद्धति के बारे में भी बड़े सुंदर ढंग से समझाया। लगभग आधा घंटे का यह धारा प्रवाह प्रवचन और इसका एक - एक शब्द हम सभी को सारे भ्रमजाल और भटकनों से मुक्त रखने के लिए विवेक पूर्ण तर्कों का अमोघ राम बाण रूपी सरल और सारवा-उपचार है।

कार्यक्रम के अंत में (144 देवियाँ और 151 पुरुष) कुल 295 नवीन इच्छुक साधकों ने, परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज की तेजस्वी, ओजपूर्ण, जीवंत वाणी में "नाम दीक्षा" ग्रहण कर स्वयं को धन्य बनाया। कार्यक्रम में गाजियाबाद दिल्ली, इंदौर,भोपाल ,रायसेन,होशंगाबाद,शिवपुरी,अशोकनगर आदि जगह से श्रीरामशरणम परिवार के साधक सम्मिलित हुए सत्संग की उपस्तिथि 800-1000 के लगभग रही उलेखनीय है कि प्रत्येक रविवार को श्रीरामशरणम कमला भवन में प्रत्येक रविवार को श्री अमृतवाणी सत्संग का कार्यक्रम प्रातः 8 बजे से 9:15 बजे तक होता है इसमें भेंट,चढ़ावा, फल, फूल,का प्रसाद नही होता है इसमें समयबद्धता,अनुशासन, आडम्बर विहीनता,बंधन रहित, पेर छूना-छूलाना वर्जित, मानस उपासना का सरलतम , यह संत पथ है कोई मत या साम्प्रदायक। ■

Sadhna Satsang (July to December 2022)

Haridwar	30 June to 3rd July	Thursday to Sunday
Haridwar	8 to 13 July	Friday to Wednesday
Haridwar (Ramayani Satsang)	25 Sept to 4 Oct	Sunday to Tuesday
Haridwar	11 to 14 November	Friday to Monday
Fazalpur (Kapurthala)	18 to 21 November	Friday to Monday

Open Satsang (July to December 2022)

Delhi	27 to 29 July	Wednesday to Friday
Rohtak	13 to 14 August	Saturday to Sunday
Rewari	3 to 4 September	Saturday to Sunday
Gurdaspur	7 to 9 October	Friday to Sunday
Pathankot	15 to 16 October	Saturday to Sunday
Jammu	28 to 30 October	Friday to Sunday
Amritsar	6 November	Sunday
Sujanpur	25 to 27 November	Friday to Sunday
Alampur (H.P.)	4 December	Sunday
Bhiwani	10 to 11 December	Saturday to Sunday
Surat	17 to 18 December	Saturday to Sunday

Naam Deeksha in Delhi, Shree Ram Sharnam (July to December 2022)

July	13	Wednesday	4.00 PM
August	21	Sunday	10.30 AM
September	11	Sunday	10.30 AM
October	23	Sunday	10.30 AM
December	25	Sunday	11.00 AM

Purnima (July to December 2022)

July	13	Wednesday
August	12	Friday
September	10	Saturday
October	9	Sunday
November	8	Tuesday
December	8	Thursday

Diksha In Other Centres (July to December 2022)

Rohtak, Haryana	Sunday	14 August
Rewari, Haryana	Sunday	4 September
Gurdaspur, Punjab	Sunday	9 October
Pathankot, Punjab	Sunday	16 October
Jammu, J&K	Sunday	30 October
Amritsar,Punjab	Sunday	6 November
Fazalpur, Punjab	Sunday	20 November
Sujanpur, Punjab	Sunday	27 November
Alampur, HP	Sunday	04 December
Bhiwani, Haryana	Sunday	11 December
Surat,Gujrat	Sunday	18 December

Dear Children, Below is a word search. There are ten questions and the correct answers are hidden. Please search for them:

1. The name of the mother of Lord Ram?
2. The name of the father of Lord Ram.
3. Name of the Guru of Lord Ram?
4. Guru Purnima is known by one more name. Search for the name.
5. Name of the God who carried the Sanjivani booti for Lakshman.
6. Whose avatar is Lord Ram?
7. The name of the first demon who was killed by Lord Ram.
8. For how many years was Lord Ram in exile?
9. The name of the brother of Ravana who left Lanka and helped Lord Ram in the battle against Ravana?
10. The name of the place in Lanka where Lord Hanuman found Ma Sita ?

WORD SEARCH

D	S	H	V	B	R	T	G	X	B	V	R	I	P
G	O	B	E	M	F	R	O	Y	C	N	B	T	D
F	S	E	D	A	S	H	A	R	A	T	H	A	Y
X	C	N	V	Q	Y	N	T	F	F	P	A	E	V
K	N	A	Y	R	P	T	C	S	D	A	N	H	I
A	K	N	A	T	B	R	O	T	C	A	U	B	B
U	V	A	S	H	I	S	T	H	N	E	M	A	H
S	Q	K	H	A	U	A	W	K	Q	D	A	R	I
A	L	D	O	F	H	N	B	L	X	R	N	E	S
L	P	E	K	E	O	D	E	P	H	O	T	A	H
Y	D	V	A	G	N	E	A	R	A	A	I	D	A
A	G	H	R	J	H	E	R	K	T	K	A	Q	N
I	B	V	Y	A	S	P	U	R	N	I	M	A	A
M	M	T	S	D	N	A	O	M	A	O	H	F	T
A	Y	O	V	O	W	N	A	V	I	S	H	N	U
Z	L	F	L	M	J	I	X	P	E	M	A	I	N
J	E	W	I	S	K	E	T	A	D	A	K	A	p
F	O	U	R	T	E	E	N	A	N	R	G	T	A

Answers: Kausalya, Dasharath, Vashisth, Vyas Purnima, Hanuman, Vishnu, Tadaka, Fourteen, Vibhishana, Ashoka

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर - 4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा- 122051 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and
printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924